International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 379-382

श्री राजीव गांधी की भारतीय राजनीति में भूमिका : एक ऐतिहासिक विश्लेषण

Dr. Sanjeet
Lect. in History, G.S.S.S. Baniyani, Rohtak, Haryana, India

सारांश
वस्तुतः स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी का नाम भारतीय राजनीति के इतिहास में बड़े आदर से लिया जाता है। वे एक ऐसे दूरदर्शी सोच के व्यक्ति थे, जिन्होंने 21वीं सदी के भारत की परिकल्पना की थी और उसे कार्यरूप देने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया था। उन्होंने युवाओं की शक्ति को पहचाना और महान संकल्प के साथ आम जन तक पहुंच कर आम लोगों के जनप्रिय नेता बन गए। चूकिं उनकी राजनीतिक यात्रा अधिक लम्बी नहीं रही, फिर भी उन्होंने भारतीय राजनीति को नये आयाम प्रदान किये तथा भारत के विदेशी सम्बन्धों को सुधारने की दिशा में अहम् कदम उठाए। उन्होंने तत्कालीन पंजाब समस्या के सन्दर्भ में संत लौगोंवाल से बातचीत करके ईमानदारी से कार्य किया और इस गंभीर समस्या का समाधान खोजने में सफलता पाई। इसी तरह मिजोरम तथा असम समस्या के सन्दर्भ में उन्हें सफलता मिली। प्रस्तुत शोध पत्र में श्री राजीव गांधी की भारतीय राजनीति में भूमिका का ऐतिहासिक विश्लेषण किया गया है।

मूल शब्द : भारतीय राजनीति, सूचना तकनीक, राष्ट्रीय विकास, औद्योगिक विकास, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध।

प्रस्तावना
वास्तव में आजाद भारत के महानतम प्रधानमंत्रियों की श्रृंखला में श्री राजीव गांधी का नाम इतिहास के सुनहरे पन्नों में दर्ज हैं। एक महान् नेता की निष्छलता एवं प्राकृतिक सेवा की प्रवृत्ति ने इस राष्ट्र को विश्व की एक सृदृढ़ शक्ति के रूप में स्थापित कर दिया है। श्री राजीव गांधी जी एक संवेदनशील, कोमल हदय के महान् नेता थे, जो कुछ भी उनके हदय में अंकित होता था, उसे ही वे अपनी जबान से दोहराते थे। श्री राजीव गांधी जी ने जो कहा उसको एक महान् स्वप्नद्रष्टा की तरह साकार रूप भी दिया। इक्कीसवीं सदी के भारत की कल्पना सिर्फ भाषण बाजी नहीं थी, वरन् इसके परिपेक्ष्य में निहित एक कल्पनाशीलता एवं नियोजन था। इस नियोजन को कार्यक्रम में परिवर्तित करने के लिए श्री राजीव जी ने अपने जीवन को समर्पित कर दिया। श्री राजीव गांधी जी को सबसे कम उम्र में विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के प्रधानमंत्री बनने का गौरव हासिल हैं। वह मात्र 40 वर्ष की आयु में ही भारत के प्रधानमंत्री बन गए। श्री राजीव गांधी भारत के 7वें प्रधानमंत्री थे और वे भारत की एक मात्र महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के होनहार पुत्र थे। उनके पिता का नाम फिरोज गांधी था और उनके नाना पंडित जवाहरलाल नेहरू जोकि भारत के प्रथम प्रधानमत्री थे।[1]

प्रधानमंत्री के रूप में राजीव गांधी ने भारतीय प्रशासन के आधुनिकीकरण में बहुमूल्य योगदान दिया। 21वीं सदी में सूचना प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका को समझते हुए उन्होंने इस क्षेत्र में भारत की क्षमता विकसित करने के लिए सक्रिय रूप से कार्यं किया। उन्होंने युवाओं को आगे बढाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए। मरणोपरांत 1991 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया राया। राजीव गांधी भारत के सबसे कम उम्र के प्रधानमत्री थे और संभवतः दुनिया के उन युवा राजनेताओं में से एक थे, जिन्होंने सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश की सरकार का नेतृत्व किया है।

भारतीय राजनीति में प्रवेश
चूंकि श्री राजीव गांधी के भाई संजय गांधी की एक हवाई जहाज दुर्घटना में असामयिक मृत्यु के बाद माता इन्दिरा को सहयोग देने के लिए श्री राजीव गांधी ने राजनीतिक महौल में प्रवेश लिया और वो अमेठी से लोकसभा का चुनाव जीत कर सांसद बने परन्तु दुर्भाग्यवश दिनांक 31 अक्टूबर 1984 को सिख आतंकवादियों द्वारा प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की हत्या किए जाने के बाद श्री राजीव गांधी भारत के प्रधानमत्री बने और अगले आम चुनावों में सबसे अधिक बहुमत पाकर प्रधानमंत्री बने रहे।[2] यद्यपि श्री राजीव गांधी जी भले ही जीवित न हो लेकिन वे 21वीं सदी के भारत के निर्माता हैं और वे हमेशा ही प्रांसगिक रहेगे। आज राजीव जी के महान् संकल्प और विचारधारा को तेजस्विता प्रदान करते हुए श्रीमती सोनिया गांधी एवं श्री राहुल गांधी उनके पथ का अनुगमन कर रहे हैं। जिस तरह से असली भारत को खोजने के लिए श्री राजीव गांधी जी ने गांव–गांव, चौपालों और झुग्गी बस्तियों में पहुंचकर भारत को पहचाना था, उसी पथ का अनुगमन करते हुए उनके सुपुत्र श्री राहुल गांधी जी पैदल चलकर, ट्रेन में साधारण कोच में सफर करके लोगों के हृदय में पहुंच रहे थे। जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि प्रारंभ में राजीव गांधी का राजनीतिक में कोई रूचि नही थी परन्तु वर्ष 1980 में उनके भाई संजय गांधी की एक विमान दुर्घटना में आकस्मिक मृत्यु के बाद अपनी माँ श्रीमती इन्दिरा गांधी के कहने पर राजनीति में प्रवेश किया। उन्होंने अपने भाई के पूर्व संसदीय क्षेत्र अमेठी से ही अपना पहला लोकसभा चुनाव जीता और संसद में जगह बनाई। जल्द ही वह काग्रेस पार्टी के महासचिव बन गए। वर्ष 1981 में उन्होंने अमेठी में संसद सदस्य का चुनाव जीता और वर्ष 1983 में वे काग्रेस पार्टी के महासचिव नियुक्त हुए। 31 अक्टूबर 1984 के दिन उनकी माता इंदिरा गांधी की नृशंस हत्या के बाद उन्होने कार्यवाहक प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। 1984 में उन्होंने आम चुनावों का आवाहन किया और

[1] नीना गोयल, द असैसनेशन ऑफ राजीव गांधी, 2016.

[2] मीना अग्रवाल, राजीव गांधी, 2011.

सहानुभूति की लहर पर सवार होकर काग्रेस पार्टी के लिए भारी बहुमत के साथ जीत दर्ज क्री। कांग्रेस पार्टी ने निचले सदन को 80 प्रतिशत सीटें जीत कर आजादी के बाद की सबसे बड़ी जीत हासिल की। अपनी माँ की हत्या के बाद श्री राजीव गांधी जी ने राष्ट्र को संबोधित करते हुए अपने प्रथम प्रसारण में बहुत ही कम शब्दों में कहा कि वह केवल मेरी माँ ही नहीं हम सब की माँ थी, हिंसा, घृणा व देश से इंदिरा जी की आत्मा को दुःख पहुंचता था, आप शांत रहे और धैर्य से काम लें।[3]

इन शब्दों का देश के नागरिकों पर जादुई असर हुआ, लोगों के आँसू थमने लगे। राजीव जी के व्यक्तित्व का ऐसा प्रभाव हुआ कि देश में नफरत की आँधी रुक सी गई। राजीव जी की कोमलता, मधुर स्वभाव एव ईमानदारी उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी वह राजनीति और कूटनीति के कर्त्तव्यों को इतनी अच्छी तरह से सुलझा लेते थे कि सम्पूर्ण विश्व उनकी संतुलित एवं संयमित प्रणाली से आश्चर्यचकित हो गया। तत्कालीन पंजाब की वह विकराल समस्या को जिस निर्भीकता एवं शान्तिपूर्ण ढंग से हल करके ऐसा चमत्कारिक कार्य किया कि सारा विश्व उनका प्रशंसक हो गया। श्री राजीव गांधी जी के सन्दर्भ में यह कहावत प्रचलित हो गई कि क्या उन्हें कोई दैवीय शक्ति प्राप्त है या वह किसी शक्ति के अवतार हैं। अतः निष्कर्ष यह है कि वे भारत माता के सच्चे लाल थे।[4]

जब श्री राजीव गांधी देश के प्रधानमंत्री बने तो उनके सामने अनेक समस्याएं थी। उन्होंने पंजाब समस्या के उफान को कम करने के लिए तत्कालीन गृहमंत्री एस.बी.चव्हाण की अध्यक्षता में एक समिति बनाई ताकि प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की ब्लू स्टार ऑपरेशन कार्यवाही से उत्पन्न समस्या का सही समाधान किया जा सके। उन्होंने अकाली दल के नेता संत लौगोंवाल से पहल करके बातचीत शुरू की और अपनी राजनीतिक क्षमता का परिचय दिया। अंततः उनके प्रयासों से 24 जुलाई 1985 को पंजाब की गंभीर समस्या का समाधान निकल आया। इसके बाद इसे राजीव–लौगोंवाल के समझौते से जाना जाता है। तत्पश्चात पंजाब में चुनाव हुए और अकाली दल सत्ता में आया। परन्तु दुर्भाग्य की बात यह रही कि आपसी विश्वास का नया अध्याय लिखने वाले संत लौगोंवाल की हत्या कर दी गई। राजीव गांधी ने ऑपरेशन ब्लैक–थण्डर चलाकर स्वर्ण मन्दिर में आतंक का गढ बन चुके क्षेत्र की आंतकवादी गतिविधियों को हिला कर रख दिया।[5] इसके बाद धीरे–धीरे पंजाब शान्ति के मार्ग पर आ गया, जिसका श्रेय प्रधानमंत्री राजीव गांधी को जाता है। इसी तरह मिजोरम तथा असम समस्या के सम्बन्ध में भी राजीव गांधी ने अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए उन क्षेत्रों की अशांति को शांति में बदल दिया। श्री राजीव गांधी जी की सौम्य छवि, सुदर्शन व्यक्तित्व और बेहद संजीदगी एवं गरिमामय लहजे के उच्चारण से विदेशी पत्रिकाओं में वे सदैव आकर्षण का केन्द्र होते थे। अमेरिका से प्रकाशित एक पत्रिका ने राजीव जी को विश्व का सर्वाधिक लोकप्रिय व्यक्तित्व का खिताब देते हुए लिखा था कि श्री राजीव गांधी पूरब के सूरज हैं, जिनसे पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति को एक सांस्कृतिक, वैचारिक प्रकाश प्राप्त होगा। राजीव जी के अन्तस में यह विचार सम्माहित्त था कि भारत के निर्माण और ऊर्जा में बढ़ोत्तरी के लिये युवाओं को प्रोत्साहन और जिम्मेदारी सौंपना अपरिहार्य है, इसलिए उन्होंने तमाम अन्तर्विरोधों को परवाह नहीं करते हुए युवाओं के 18 वर्ष में मताधिकार का अधिकार प्रदान क्रिया। युवाओं के लिए अनंत संभावनाओं का भण्डार विकसित करने के लिए देश में आई.टी. संस्कृति को प्रोत्साहन दिया। आज आधुनिक टेक्नोलोजी से हम विश्व की विकास दर से कदम मिला रहे है। कम्पयूटर टेक्नोलॉजी को भारत में विकसित करने, जन–जन तक पहुंचाने का श्रेय श्री राजीव गांधी को है, कम्यूटर प्रणाली के आगमन से देश को प्रौद्योगिकी, रेलवे, संचार, स्वास्थ्य, शिक्षा और निर्माण के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है, भारत को विकास दर की बढोत्तरी ने विश्व को अचंभित कर दिया।[6]

जिस समय भारत की सरकार कुछ देशों को अपना दोस्त कह रही थी, उन देशों को राजीव जी के नेतृत्व में मजबूत होता भारत रास नहीं आ रहा था । श्री राजीव गांधी जी भारत के संग ही दक्षिण एशिया के एक सर्वमान्य नेता थे इसलिए वे पड़ोसी राष्ट्रों में भी शांति और विकास की अवधारणा रखते थे, इससे भारत के परम्परागत विरोधी राष्ट्र हमसे ईर्ष्या कर रहे थे, विश्व की 6वीं शक्ति के पायदान पर पहुंचाने में राजीव जी संकल्पित थे जो विरोधी राष्ट्रों को रास नहीं आ रहा था। इसी शांति और विकास के मिशन के कारण एक महान् विश्व नायक को अपने प्राण न्यौछावर करने पडें श्रीलंका में शांति के प्रयासों के मिशन के कारण श्री राजीव गांधी अन्तराष्ट्रगेंय षड़यंत्र का शिकार हुए व दिनांक 21 मई, 1991 को श्रीपेरम्बदूर में वे एक बम विस्फोट में शहीद हो गए। एक विदेशी अखवार ने पुनः लिखा था कि पूरब का सूरज दोपहर से पहले ही अस्त हो गया। प्रधानमंत्री के रूप में श्री राजीव गांधी जी बेहद लोकप्रिय थे। भारत के प्रघानमंत्री श्री राजीव गांधी ने अपने कार्यकाल के दौरान वह प्रघानमंत्री के पद में थोडी गतिशीलता लेकर आये। उन्हें भारत में कंप्यूटर की शुरुआत करने का श्रेय जाता है। गांधी के आरोहण का एक अन्य मुख्य कारण विभिन्न मसलों पर उनका आधुनिक दृष्टिकोण और युवा उत्साह था। उन्होंने इंदिरा गांधी के समाजवादी राजनीति को हटकर अलग दिशा में देश का नेतृत्व करना शुरू किया। उन्होंने अमेरिका के साथ द्विपक्षीय संबंधों में सुधार किया और आर्थिक एवं वैज्ञानिक सहयोग का विस्तार किया।[7]

उन्होंने विज्ञान, टेक्नोलोजी और इसरो सम्बधित उद्योगों की आंर ध्यान दिया और टेक्नोलोजी पर आधारित उद्योगों विशेष रूप से कप्यूटर, एयरलाइंस, रक्षा और दूरसंचार पर आयात कोटा, करों और शुल्क को कम किया। वह तानाशाही शासन को कम करने और प्रशासन को नौकरशाही घपलेबाजों से व दलालों से मुक्त कराने की बात कहने वाले पहले प्रधानमंत्री थे। भ्रष्ट नौकरशाही को भी उन्होंने आड़े हाथों लिया। उन्होंने ही सबसे पहले देश को एक समृद्ध और शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में इक्कीसवीं सदी की ओर ले जाने का नारा देकर जनमानस में नई आशाएं जगाई। 1986 में राजीव गांधी ने भारत भर में उच्च शिक्षा के कार्यक्रमों के आधुनिकीकरण और विस्तार के लिए एक राष्टीय शिक्षा नीति की घोषणा की।[8]

1986 में गुट–निरपेक्ष आदोलन का नेतृत्व भारत के पास आने पर कई अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर स्पष्ट और बेबाक नीति देकर श्री राजीव गांधी ने भारत की एक सम्मानजनक स्थान दिलाया। फिलिस्तीनी संघर्ष, रंगभेद के खिलाफ दक्षिण अफ्रीकी लोगों के संघर्ष, स्वापो आन्दोलन, नामीबिया की स्वतंत्रता के समर्थन तथा अफ्रीकी देशों की सहायता के लिए अफ्रीकी फंड की स्थापना में

[3] राजीव गांधी, हिज माइण्ड एण्ड आईडियोलॉजी, 1991.

[4] रविन्द्र कुमार, राजीव गांधीः स्पष्ट और दूरदर्शी, 2006.

[5] संजय कुमार सिंह, राजीव गांधी, 2005.

[6] दुरईस्वामी, राजीव गांधी , 2014.

[7] डी.आर कार्तिकेयन एवं राधाविनोद राजू, राजीव गांधी की हत्या, 2014.

[8] के. रागोथामान, कांस्पिरेसी टू किल राजीव गांधी, 2012.

भारत की पहल आधुनिक विश्व इतिहास का स्वर्णिम दस्तावेज बन गई है। श्री राजीव गांधी ने माले में हुए विद्रोह को दबाकर और श्रीलंका की जातीय समस्या के निदान के लिए स्वतंत्र पहल पर समझौता कर हिन्द महासागर में अमेरिका, पाक तथा अन्य देशों के बढ़ते सामरिक हस्तक्षेप पर अकुंश तो लगाया ही, साथ ही विश्व को यह भी अहसास दिला दिया की भारत इस क्षेत्र में एक महती शक्ति है, जिसे विश्व की कोई भी ताकत अनदेखा नहीं कर सकती। इससे विश्व राजनीति में भारत की एक विशिष्ट पहचान बनी तथा इसके साथ–साथ श्री राजीव गांधी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रसिद्ध हुए।

राजीव गाँधी की असफलता

श्री राजीव गांधी ने पंजाब में आतंकवादियों का सफाया करने के लिए व्यापक पुलिस और सेना अभियान चलाया। श्रीलंका सरकार और एलटीटी विद्रोहियों के बीच शांति वार्ता के प्रयासों का उल्टा असर हुआ और राजीव की सरकार को एक बड़ी असफलता का सामना करना पड़ा। 1987 में हस्ताक्षर किये गए शांति समझौते के अनुसार भारतीय शांति सेना को श्रीलंका में एलटीटी को नियंत्रण में लाना था पर अविश्वास और संघर्ष की कुछ घटनाओं ने एलटीटी आतंकवादियों और भारतीय सैनिकों के बीच एक खुली जंग के रूप में बदल दिया। हजारों भारतीय सैनिक मारे गए और अंततः राजीव गांधी ने भारतीय सेना को श्रीलंका से वापस बुलाना पड़ा।[9]

भ्रष्टाचार के आरोप

हालांकि राजीव गांधी ने भ्रष्टाचार समाप्त करने का वादा किया था पर उन पर और उनकी पार्टी पर खुद भ्रष्टाचार के कई आरोप लगे। सबसे बड़ा घोटाला स्विडिश बोफोर्स हथियार कंपनी द्वारा कथित भुगतान से जुड़ा बोफोर्स तोप घोटाला था। जिसका मुख्य पात्र इटली का एक नागरिक कओटावियो क्वाटोराची था, जोकि सोनिया गांधी का मित्र था। घोटालों के कारण उनकी लोकप्रियता में तेजी से कमी आई, जिससे उनकी प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लगा और मिस्टर क्लीन की उनकी छवि भी धूमिल हुई और 1989 में आयोजित आम चुनावों में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। एक गठबंधन की सरकार सत्ता में आई पर वह अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर सकी और 1991 में आम चुनाव करवाये गए। चूंकि 1991 के आम चुनावों के समय श्री राजीव गांधी को पूर्ण विश्वास हो गया था कि जनता उन्हें फिर से बहुमत के साथ विजयी बनायेगी। इस विश्वास और जनता से मिले समर्थन स्नेह से अभिभूत हो राजीव गांधी ने अपने सुरक्षा घेरे को तोड़ दिया। लेकिन विधि की विडम्बना देखिये कि जनता से उनकी करीबी ही उनकी जान ले बैठी। दिनांक 21 मई 1991 को मद्रास से 50 कि.मी. दूर स्थित श्री पेरूबुंदुर में एक चुनाव सभा में लोगों से हार लेते समय तमिल आतंकवादियों ने बम विस्फोट करके उनकी हत्या कर दी। इस सुनियोजित षड़यंत्र ने देश की राजनीति से एक युवा युग और आकांक्षा का हमेशा के लिए पटाक्षेप कर दिया जिसने भारतीय ही नहीं पूरे विश्व जनमानस को भीतर तक झकझोर कर रख दिया।

मूल्यांकन

वास्तव में श्री राजीव गांधी का व्यक्तित्व, सज्जनता, मित्रता और प्रगतिशीलता का प्रतीक था। लगभग एक दशक के छोटे से राजनैतिक जीवन में श्री राजीव गांधी ने एक अमिट छाप छोड़कर अपने देश भारत से हमेशा के लिए विदा हो गये, भारत सरकार ने देश के इस दिवंगत नेता को सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से विभूषित कर यथेष्ट श्रद्धाजंली दी। आज श्री राजीव गांधी हमारे बीच नहीं हैं पर उनके द्वारा शुरू किया गये अभियान ने भारत को एक नई पहचान दिलवाई। स्वभाव से गंभीर लेकिन आधुनिक सोच एवं निर्णय लेने की अद्भुत क्षमता वाले श्री राजीव गांधी देश को दुनिया की उच्च तकनीकों से पूर्ण करना चाहते थे और जैसा कि वे बार–बार कहते थे कि भारत की एकता को बनाये रखने के उद्देश्य के अलावा उनके अन्य प्रमुख उद्देश्यों में से एक है– इक्कसवीं सदी के भारत का निर्माण।

भारतीय लोकतंत्र को सत्ता के दलालों से मुक्त कराने की बात कहने वाले वे पहले प्रधानमन्त्री थे। भ्रष्ट नौकरशाही को भी उन्होंने आड़े हाथों लिया। उन्होंने ही सबसे पहले देश को एक समृद्ध और शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में इक्कसवीं सदी की और ले जाने का नारा देकर जनमानस में नई आशाएं जगाई। प्रथानमत्री के रूप में राजीव गांधी ने भारतीय प्रशासन के आधुनिकीकरण में बहुमूल्य योगदान दिया। 21वीं सदी में सूचना प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका को समझते हुए उन्होंने इस क्षेत्र में भारत की क्षमता विकसित करने के लिए सक्रिय रूप से कार्य किया। श्री राजीव गांधी एक कुशल राजनेता ही नहीं थे, अपितु स्वप्नदृष्टा प्रधानमंत्री थे। समय से पूर्व भारत को 21वीं सदी में ले जाने वाले इस प्रधानमन्त्री ने भविष्य के भारत का जो सपना देखा था, उसमें सम्पूर्ण भारत में ज्ञान, संचार, सूचना, तकनीकी सेवाओं के साथ मुख्यतः उसे कम्पयूटर से जोड़ना था । वे भारत को एक अक्षय ऊर्जा का स्रोत बनाना चाहते थे। उनकी इस नवीन कार्यशैली और सृजनात्मकता का ही परिणाम है कि आज भारत सौंर उर्जा से लेकर देश के कोने–कोने में कम्पयूटर से जुड़ गया है। आज देश के घर–घर में कम्पयूटर का उपयोग श्री राजीव गांधी की दूरदर्शी सोच का परिणाम है। अपनी विदेश नीति के तहत उन्होंने कई देशों की यात्राएं की और भारत के आर्थिक, सांस्कृतिक सम्बन्ध बढाये। भारत जैसे बडे लोकतांत्रिक देश के प्रधानमन्त्री का भार अपने युवा कंधों पर लेते ही राजीव गांधी ने साहसिक कदम उठाकर और ज्वलंत समस्याओं के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण अपनाकर अपनी छवि एक विवेकशील और गतिशील राजनेता के रूप में प्रतिष्ठित की। उनकी स्पष्टवादिता और आधुनिक विचारों ने उन्हें शीघ्र ही मिस्टर क्लीन को संज्ञा दी। युवाओं की ऊर्जा के प्रतीक राजीव गांधी देश को भी अक्षय ऊर्जा की दृष्टि से संपन्न राष्ट्र बनाना चाहते थे। उन्होंने भारत को कफ्यूटर, संचार, सूचना और तकनीकी के क्षेत्र में नया आयाम दिया। 21वीं सदी की और जाने का नारा देकर शक्तिशाली राष्ट्र का वैभव दिया। इसके साथ ही नई शिक्षा नीति में शिक्षा को व्यवसायिकता के साथ जोड़ने का सार्थक प्रयास किया। भारत सरकार ने इस कर्मठ युवा को देश का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न सन् 1991 में प्रदान कर अपनी कृतज्ञता प्रकट की। लगभग एक दशक के छोटे से राजनैतिक जीवन में श्री राजीव गांधी ने एक अमिट छाप छोड़कर अपने देश भारत से हमेशा के विदा हो गये, भारत सरकार ने देश के इस दिवगंत नेता को एक सर्वोच्च सम्मान भारत रतन से विभूषित कर यथेष्ट श्रद्धाजंलि दी है। वे अपने अच्छे कार्यों, दूरदर्शिता व सृजनात्मकता की वजह से समस्त भारतवासियों के हृदय में हमेशा ही जीवित रहेगें।

सन्दर्भ

1. राजीव गांधी, हिच माइंड एंड इडियोलॉजी, 1991.
2. सुंदर राम, भारत रत्न राजीव गांधी, 1994.

[9] बेनी एगवायर, राजीव गांधी : दॉ फाईट ऑफ साइअन, 2011.

3. राजीव गांधी, ग्रेटेस्ट पर्सनेलिटी ऑफ इंडिया, 1996.
4. रमेश दलाल, राजीव गांधी असैसनेशन, 2001.
5. संजय कुमार सिंह, राजीव गांधी, 2005.
6. रवीन्द्र कुमार, राजीव गांधीः स्पष्ट और दूरदर्शी, 2006.
7. जगदीश पीयूष,राजीव गांधी के सपनों का भारत, 2009
8. मीना अग्रवाल, राजीव गांधी, 2011.
9. बेन्नी एग्वायर, राजीव गांधीः द फाइट ऑफ साइअन, 2011.
10. के. रागोथामान, कांसिपिरेंसी टू किल राजीव गांधी, 2012.
11. दुरईस्वामी, राजीव गांधी, 2014.
12. राधा विनोद राजू, राजीव गांधी असैसनेशन, 2014.
13. डी आर कार्तिकेयन एवं राधा विनोद राजू, राजीव गांधी की हत्या, 2014.
14. अहमद फैयाज, द असैसनेशन ऑफ राजीव गांधी, 2014.
15. नीना गोयल, द असैसनेशन ऑफ राजीव गांधी, 2016.